प्रकाशन तिथि : 01 अप्रेल, 2022
प्रेषण तिथि : 04 अप्रेल, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 02 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

माननीय संघ प्रमुख श्री का मुंबई, सूरत, मेवाड़ व वागड़ प्रवास

बेणेश्वर (डूंगरपुर)

स्वयंसेवकों व समाज बंधुओं से संवाद हेतु प्रवास कार्यक्रम के तहत अगले चरण में माननीय संघप्रमुख श्री मुंबई, सूरत, मेवाड़ व वागड़ क्षेत्र के प्रवास पर रहे। गुजरात प्रवास के तहत साणंद में रात्रि विश्राम के पश्चात 11 मार्च को माननीय संघप्रमुख श्री महाराष्ट्र संभाग के वापी पहुंचे जहां उनके सानिध्य में स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि समाज सेवा कोई पार्ट टाइम जॉब नहीं है। हम यदि यह सोचें कि हम अपनी सारी आवश्यकताओं को पूरी कर लें या नौकरी आदि से निवृत्त हो जाएं, उसके बाद समाज कार्य करेंगे तो यह संभव नहीं है। अभी हम जिस भी स्थिति में हैं उसी स्थिति में अपने अन्य दायित्वों के साथ साथ समाज कार्य करेंगे तभी एक समय ऐसी स्थिति आ सकती है जब हम पूर्णतः समाज के प्रति समर्पित होकर कार्य कर सकेंगे। यदि समाज के प्रति हमारे हृदय में पीड़ा है तो वह पीड़ा हमें कभी भी शांति से बैठने नहीं देगी और कर्म के रूप में अवश्य प्रकट होगी। उन्होंने हीरक जयंती कार्यक्रम में मिले सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हीरक जयंती समारोह की सफलता आप सभी के कारण ही संभव हो सकी उसके लिए हम आप सभी के प्रति कृतज्ञ हैं। संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाना व महावीर सिंह रोजा ने भी अपने विचार रखे। नरेंद्र सिंह कितपाला ने कार्यक्रम का संचालन किया। प्रांतप्रमुख खेत सिंह चादेसरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 12 मार्च को माननीय संघ प्रमुख श्री मुंबई पहुंचे जहां उन के सानिध्य में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रातः 7 बजे भायंदर पूर्व में नारायण शाखा द्वारा आई माता मंदिर में स्नेहमिलन रखा गया। इसके पश्चात दिन में 11.30 बजे मलाड में वाघेश्वरी माता मंदिर में वीर दुगार्दास शाखा द्वारा कार्यक्रम आयोजित हुआ। सायं 7 बजे भूलेश्वर स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर में स्नेहमिलन सम्पन्न हुआ। इन कार्यक्रमों में स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम चाहते हैं कि हमारे समाज में राम, कृष्ण, महाराणा प्रताप, दुगार्दास, शिवाजी पैदा होने चाहिए लेकिन स्वयं वैसा बनने के लिए हम प्रस्तुत नहीं होते क्योंकि महापुरुष बनने के लिए त्याग करना पड़ता है, साधना करनी पड़ती है, सांसारिक सुखों को ठोकर मार के अपने लक्ष्य के लिए कष्ट सहने पड़ते हैं। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

अभिनंदनीय पहल

विगत दिनों ने गुजरात सरकार ने स्कूली पाठ्यक्रम में श्रीमद्भगवद्गीता को शामिल करने की अभिनंदनीय पहल करने की घोषणा की है। हालांकि इससे बहुत पहले पूर्व प्रधानमंत्री राजीवगांधी ने 1986 की शिक्षा नीति के तहत रामायण और महाभारत का संक्षिप्त रूप पाठ्यक्रम में शामिल करने की पहल की थी और उनके नवोदित प्रयोग के रूप में प्रारंभ हुए नवोदय विद्यालयों में रामायण व गीता का संक्षिप्त रूप पढ़ाना प्रारंभ किया था लेकिन उनकी वह पहल वहीं तक सीमित रही और शिक्षा में भारतीय मूल्यों के समावेश की उनकी चाह अल्पसंख्यक बहुसंख्यक के नाम पर चल रही वोट की राजनीति की भेंट चढ़ गई। तदतंर जो भी प्रयास हुए वे सभी तुष्टिकरण की राजनीति के कारण परवान नहीं चढ़ पाये, अनेक बार विभिन्न मंचों पर श्रीमद्भगवद्गीता को पाठ्यक्रम में शामिल करने का आग्रह सरकारों से किया गया क्योंकि गीता एक मात्र ऐसा ग्रंथ है जो भारत की भारतीयता का संपूर्ण प्रतिनिधि है और वह वास्तव में कोई पंथिक ग्रंथ न होकर संपूर्ण मानव जाति का ग्रंथ है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

'अहंकार को सामाजिक स्वाभिमान में बदलें': संरक्षक श्री

(तनाश्रम (जैसलमेर) में स्नेहमिलन संपन्न)

ईश्वरीय कार्य कभी रुका नहीं करता है। जो इस कार्य में स्वयं को नियोजित करता है उस पर ईश्वर की कृपा होती है और जो स्वयं को प्रस्तुत नहीं करता वह पीछे रह जाता है। लेकिन कार्य ईश्वर की कृपा से ही होता है, हम तो केवल माध्यम बनते हैं इसलिए कभी भी यह भ्रम ना पालें कि हम करने वाले हैं। हम जागृत रहें तो ईश्वर हमें अपने कार्य के लिए माध्यम बनाता है और जिन्हें यह अवसर मिलता है वे भाग्यशाली होते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का हीरक जयंती समारोह भी ऐसा ही अवसर था जिसमें निमित्त बनने का हम सब को सौभाग्य मिला। ईश्वरीय कृपा से ही सभी का सहयोग मिलता गया और हीरक जयंती का स्वरूप ऐतिहासिक बन गया। उपरोक्त संदेश माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने 25 मार्च को तनाश्रम जैसलमेर में आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दिया। उन्होंने कहा कि हमारी एकता में सबसे बड़ी बाधा हमारा अहंकार है। अपने इस अहंकार को हम सामाजिक स्वाभिमान में मिला दें तो समाज में एकता अवश्य आएगी। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे अहंकार को गला कर हमें एक सूत्र में बांधने का कार्य कर रहा है। हम एक होंगे तभी संसार को भी सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे सकेंगे। क्षत्रिय ही संसार का मार्गदर्शन कर सकता है लेकिन इसके लिए सर्वप्रथम हमारा संगठित होना आवश्यक है। केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा व संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

माननीय संघ प्रमुख श्री का मुंबई, सूरत, मेवाड़ व वागड़ प्रवास

सूरत

(पेज एक से लगातार)

राम की भांति चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ता है, प्रताप की भांति पच्चीस वर्ष जंगल में भटकना पड़ता है। हाड़ी रानी बनकर अपने पति को कर्तव्य की याद दिलाने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करना पड़ता है। त्याग और बलिदान के इस मार्ग पर चलने के लिए जब तक हम स्वयं तैयार नहीं होंगे तब तक हमारी समाज के लिए चिंता समाज में कोई भी परिवर्तन लाने में सफल नहीं होगी। क्षत्रिय कुल में हमारा जन्म अनायास ही नहीं हुआ है बल्कि इसके पीछे परमेश्वर का कोई हेतु है। उस हेतु के अनुरूप हम कर्म नहीं करते हैं तो हम अनुपयोगी हैं और अनुपयोगी वस्तु अथवा व्यक्ति की इस संसार में कोई कीमत नहीं है। हमारे पूर्वजों ने जो महान आदर्श स्थापित किए हैं उनके कारण हमें सम्मान मिलता है लेकिन हमारे लिए यह विचारणीय है कि उस सम्मान में हमारा क्या योगदान है? जिस प्रकार बैंक खाते से यदि हम राशि निकालते ही जाए तो एक दिन वह राशि समाप्त हो ही जाएगी। उसी प्रकार यदि हम पूर्वजों के किए हुए कार्यों के आधार पर ही सम्मान की चाह करते रहेंगे तो वह पूरी नहीं होगी। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने पूर्वजों के मार्ग पर चलकर अपनी कौम के गौरव में वृद्धि करें। संभागप्रमुख नीर सिंह सिंघाना, प्रांतप्रमुख रणजीत सिंह आलासण व देवी सिंह झलोड़ा सहयोगियों सहित कार्यक्रमों में उपस्थित रहे। अपने प्रवास के अगले चरण में माननीय संघप्रमुख श्री 13 मार्च को सूरत पहुंचे जहां श्री दक्षिण गुजरात राजपूत समाज भवन में उनके सानिध्य में स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि अभी हमने पूज्य तनसिंह जी रचित गीत गाया - 'आओ जरा से बैठकर चेतना नई भरें, सोचना शुरू करें।' इस गीत में आह्वान किया जा रहा है कि हम थोड़ा सा समय निकालें आज के इस आपाधापी के वातावरण में और साथ में बैठकर सोचना प्रारंभ करें, स्वयं में और समाज में नई चेतना भरने का प्रयत्न करें। आज भौतिकवाद के इस दौर में हम अपने आप को भूल गए हैं, अपने समाज के लिए समय निकालना भूल गए हैं इसीलिए पूज्य तनसिंह जी हमसे यह आह्वान कर रहे हैं। पूज्य तनसिंह जी के हृदय में मात्र 20 वर्ष की आयु में एक ऐसी पीड़ा जागृत हुई, एक ऐसा चिंतन जगा जिसने उन्हें युगपुरुष बना दिया। उन्हीं की भांति हम भी सोचना शुरू करें कि हम कहां थे और आज हमारी क्या स्थिति हो गई है। हम कल्पना करें हमारे उस इतिहास की जहां जीवन के हर क्षेत्र में हमने सीमाएं बांधी थी। ऐसा इतिहास जिस पर संसार आश्चर्य करता है क्योंकि सारे संसार का इतिहास मिलकर भी हमारे इतिहास के सामने कहीं नहीं टिकता। इस कौम में भगवान राम का जन्म हुआ, कृष्ण का जन्म हुआ और ना जाने कितने ही अवतारों और महापुरुषों का इस कौम में जन्म हुआ। लेकिन आज स्थिति ऐसी भी आई है कि जिन ऊंचाइयों को हमने छुआ था उन ऊंचाइयों से नीचे गिरते हुए हम पतन की ऐसी स्थिति में आ पहुंचे हैं जहां हम अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए भी संघर्ष कर रहे हैं। पूज्य तनसिंह जी ने आज से 75 वर्ष पूर्व ही इस स्थिति की कल्पना कर ली थी। उनकी चिंता थी कि हम इतना नीचे तक तो आ चुके हैं अब और कितना नीचे जाएंगे। हमारा जो जीवन दर्शन था जिसे हमारे महापुरुषों ने, हमारे पूर्वजों ने अपने अचिंत्य बलिदानों से निर्मित किया था उस जीवन दर्शन को कौन समझाने वाला है, वह जीवन दर्शन आने वाली पीढ़ी को कैसे प्राप्त होगा? पूर्व काल में तो हमारे घरों में इस प्रकार का वातावरण हुआ करता था जहां इस प्रकार का शिक्षण सहज ही मिल जाता था। गुरुकुल व्यवस्था में भी इसी प्रकार के शिक्षण की व्यवस्था थी। राजपूत कुल में जन्म लेने के बाद हमें क्षत्रिय बनाने का काम उस व्यवस्था में किया जाता था। लेकिन अब न परिवारों में वह वातावरण रहा ना ही गुरुकुल की शिक्षण व्यवस्था रही। ऐसी स्थिति में हमारी कौम की आने वाली पीढ़ी को वे संस्कार, जो क्षत्रिय के लिए आवश्यक है, कैसे मिलेंगे? पूज्य तनसिंह जी की इसी पीड़ा के फलस्वरुप उनके हृदय में जो चिंतन जगा उसी से श्री क्षत्रिय युवक संघ का जन्म हुआ। राजपूत को क्षत्रिय बनाने का शिक्षण देने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है और हमें समझा रहा है कि क्षत्रिय की वास्तविक परिभाषा क्या है। क्षत्रिय के रूप में जीने के लिए क्षत्रिय का सही अर्थ जानना आवश्यक है। शास्त्रों में बताया है कि क्षतात त्रायते, इति क्षत्रिय अर्थात जो क्षय से बचाने वाला है, नष्ट होने से बचाने वाला है वही क्षत्रिय है। सभी प्रकार के क्षरण को रोकने के लिए जो संघर्ष करता है वही क्षत्रिय है। ईश्वर ने हमें क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है लेकिन हम स्वयं को क्षत्रिय कहने के अधिकारी तभी बनेंगे जब हम समाज, धर्म, संस्कृति और मानवता के हो रहे क्षरण को रोकने के लिए आगे आएंगे और ऐसा कैसे किया जाये, इसका मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ बताता है। अपनी शाखाओं व शिविरों के माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ यह बताने का प्रयास कर रहा है कि 'परित्राणाय साधुनाम विनाशाय च दुष्कृताम' का पालन करना क्षत्रिय का दायित्व है। संसार में जो भी श्रेष्ठ जन हैं चाहे वह किसी भी जाति के हों, किसी भी धर्म के हों, किसी भी वर्ग के हों, किसी भी देश के हों, उनकी रक्षा करना हमारा दायित्व बनता है और जो दुष्ट लोग हैं, जो पापाचार करते हैं, जो भ्रष्टाचार और अत्याचार करते हैं, ऐसे लोग चाहे हमारे परिवार के ही क्यों ना हों ऐसे लोगों का नाश करना हमारा कर्तव्य है। पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में हमें वह मार्ग बताया जिस पर चलकर हम गीता में वर्णित क्षत्रिय के सात गुणों को प्राप्त कर सकते हैं, अपने जीवन में उतार सकते हैं। एस. जी. वी. एन. एस. विश्वविद्यालय के कुलपति महेंद्र सिंह, ज्योति कंवर देणोक, केतन सिंह चलथान, दिग्विजय सिंह ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रांतप्रमुख खेत सिंह चादेसरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में मातृशक्ति सहित हजारों समाज बंधुओं की उपस्थिति रही। इसके पश्चात माननीय संघ प्रमुख श्री मेवाड़ क्षत्रिय संस्थान सूरत के सातवें होली स्नेह मिलन समारोह में सम्मिलित हुए। यहां अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि हम अपने इतिहास पर गर्व अवश्य करें लेकिन साथ ही उस इतिहास से शिक्षा व प्रेरणा लेकर हमारे महान पूर्वजों की भांति जीवन भी जिएं जिससे एक नए इतिहास का निर्माण हो सके। (शेष पृष्ठ 7 पर)

उदयपुर

मुम्बई

चित्तौड़गढ़

फार्म-4 (नियम-8)

1. प्रकाशन स्थान	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
2. प्रकाशन अवधि	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
4. प्रकाशक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
5. सम्पादक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	पूर्ण स्वामित्व-श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास ए-8, तारानगर,झोटवाड़ा, जयपुर

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

लक्ष्मणसिंह
प्रकाशक

01.03.2022

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय युवा संघबंधु

श्री हर्षवर्धन सिंह

पुत्र श्री नाहर सिह जाखड़ी

को

IIT JAM

(M.Sc. Chemistry)

परीक्षा में 99वी रैंक प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु:

अर्जुनसिंह देलदरी	मदन सिंह थुम्बा	लाल सिंह सिराणा	महेंद्र सिंह कारोला
सुमेर सिंह उथमण	डूंगर सिंह पूनासा	महोब्बत सिंह धींगाणा	खुमान सिंह दुदिया
दीप सिंह दुदवा	सौभाग्य सिंह पांचोटा	रणजीत सिंह आलासन	शक्ति सिंह आशापुरा
गणपत सिंह भँवरानी	हिम्मत सिंह आकवा	जसवंतसिंह बावतरा	नेहपाल सिंह दुधवा
पूर्ण सिंह दहीवा	कानसिह बोकड़ा	भागीरथ सिंह लूणोल	सरूप सिंह केरिया
पृथ्वीराज सिंह पांचला	ईश्वर सिंह चोरा	संग्राम सिंह देलदरी	देवराज सिंह मांडाणी

संपादकीय

राजनीतिक दल साध्य नहीं साधन हैं

राजनीतिक दल राजनीति कर सत्ता हासिल करने के लिए बनते हैं। उनकी गतिविधियों का केन्द्र बिंदु सदैव सत्ता बना रहता है और वे सदैव ऐसी नीतियों पर काम करते हैं जिनके माध्यम से अधिकतम लोगों तक उनकी पहुंच बन सके और वे अधिकतम लोगों का समर्थन हासिल कर लोकतांत्रिक व्यवस्था में उस समर्थन के बल पर सत्ता पर नियंत्रण कायम कर सकें। भारत में भी ऐसे ही राजनीतिक दल हैं। आजादी के संघर्ष के दौरान कांग्रेस पार्टी अस्तित्व में आई और वह उस संघर्ष के दौरान एक सीमा तक राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा का प्रतीक बनी रही लेकिन आजादी के बाद वह देश की सत्ता पर काबिज होने का साधन बनकर एक पक्ष बनी। हालांकि आजादी के संघर्ष के दौरान भी उससे इतर अनेक समूह थे लेकिन फिर भी वह एक बड़े समूह के रूप में कार्यरत थी और अनेक विपरीत विचारधाराओं वाले लोगों का जमघट थी लेकिन आजादी के बाद उसका विखंडन हुआ और अनेक नये राजनीतिक दल अस्तित्व में आये। उन नये राजनीतिक दलों को ऐसे लोगों और वर्गों का समर्थन मिला जो कांग्रेस द्वारा उपेक्षित थे या जो कांग्रेस को पसंद नहीं करते थे। राम राज्य परिषद, वाम पंथी पार्टियां, स्वतंत्र पार्टी, जनसंघ, जनता दल, लोक दल, जनता पार्टी आदि सभी ऐसे ही राजनीतिक दल थे जो अखिल भारतीय स्तर पर कांग्रेस का विकल्प बनने को संघर्षरत थे। हमारा समाज प्रारंभ से ही कांग्रेस से उपेक्षित रहा। विशेष रूप से देशी रियासतों के क्षेत्र में ऐसा ही हुआ। वहां हमारी रियासतों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले लोगों को कांग्रेस ने सहयोग किया और हमारी उपेक्षा की। उसी उपेक्षा के कारण हम भी कांग्रेस के विरुद्ध रहे एवं हर स्तर पर हमने कांग्रेस का विकल्प बनने को तत्पर राजनीतिक दलों का समर्थन किया। ऐसे राजनीतिक दलों में से अधिकांश केवल कांग्रेस के विरोध में बने थे या यूं कहें कि कांग्रेस के विरोधी नेताओं के जमावाड़े थे इसलिए कालांतर में शनैः शनैः काल के गाल में समाते गये। जनसंघ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचार को लेकर आगे बढ़ रहा था और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नित्य व नियमित चलने वाली प्रक्रिया से पोषण प्राप्त कर रहा था इसलिए धीमी गति से चलता रहा और कालांतर में भारतीय जनता पार्टी के रूप में एक सशक्त विकल्प बन गया। हमारा समाज इसके सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के नारे एवं हमारी उपेक्षा व विरोध करने वाली कांग्रेस का विरोधी होने के कारण इसकी ओर आकर्षित हुआ एवं इसको मजबूती देने के लिए ईमानदारी से प्रयासरत रहा। इस प्रकार हर प्रकार के संघर्ष में इस राजनीतिक दल का हमने सहयोग किया और निचले स्तर पर इसमें हमारी भागीदारी भी उल्लेखनीय रही। जैसा कि आलेख के प्रारंभ में उल्लेख किया गया है कि हर राजनीतिक दल का मुख्य लक्ष्य राजनीति में अपना वर्चस्व स्थापित कर सत्ता पर नियंत्रण करना होता है और इसके लिए वह अधिकतम मतदाताओं को अपने पक्ष में करने का प्रयास करता है और इसी कड़ी में भारतीय जनता पार्टी ने भी उन वर्गों तक भी अपना फैलाव प्रारंभ किया जो अभी तक उसके विरोधी थे या उदासीन थे। इनमें से अधिकांश वे हैं जिनका विरोध झेलकर या जिनसे संघर्ष कर हमने इस पार्टी को सींचा था। ऐसे में दुविधा पैदा हुई। वे वर्ग राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक है और प्रारंभ में कांग्रेस के साथ रहकर सत्ता की मलाई चख चुके हैं इसलिए उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के इस निमंत्रण को स्वीकार किया और भारत की सत्ता के उभरते केन्द्र इस दल में भी अपनी मजबूत उपस्थिति कायम कर ली। उस उपस्थिति के कारण उनको भागीदारी मिलने लगी और वह भागीदारी जो पूर्व में हमें मिला करती थी, अवसरों के बंटवारे के कारण कम होती गई और अब तो यह स्थिति है कि इस पार्टी पर कब्जा ही उन लोगों का हो गया है जिनसे संघर्ष कर हमने इसे पनपाया था और आज हम किनारे कर दिए गये हैं अथवा छोटे छोटे अवसरों के लिए भी हमें संघर्ष करना पड़ रहा है।

इस स्थिति के लिए हम किसको दोष दें, क्या उस राजनीतिक पार्टी का ही दोष है या इसमें हमारा भी दोष है। हमारा यह तर्क हो सकता है कि हमने इस पार्टी का ईमानदारी से सहयोग किया, अपना समझकर व्यक्तिगत संसाधनों को झौंका और इसे उस समय खड़ा किया जब कोई इसे पूछ ही नहीं रहा था ऐसे में पार्टी को भी हमारे साथ जिम्मेदारी पूर्वक व्यवहार करते हुए हमारे योगदान के अनुरूप हमें भागीदारी देनी चाहिए। लेकिन राजनीतिक दलों की येन केन प्रकारेण सत्ता हासिल करने की नीतियों के बीच क्या यह संभव है कि वर्तमान भारत का कोई राजनीतिक दल इतना कृतज्ञता पूर्ण या ईमानदारी पूर्ण व्यवहार करेगा? ऐसे में गलती किसकी है, कमी कहाँ रह गई? यदि जमाने की वास्तविकताओं को मद्देनजर रखकर हम विश्लेषण करेंगे तो पायेंगे कि गलती हमारे आकलन में रह गई और हम ऐसे लोगों के प्रति एकनिष्ठ हुए जिनको निष्ठा का अर्थ ही पता नहीं था या जो निष्ठा का महत्व ही नहीं जानते अथवा जिनको इसकी जरुरत ही नहीं थी। ऐसे में हमें उन वर्गों की ओर देखना पड़ेगा जिन्होंने हमें विस्थापित कर इस पार्टी पर नियंत्रण स्थापित किया है। वे राजनीतिक पार्टियों को साध्य नहीं साधन के रूप में स्वीकार करते हैं और सत्ता में भागीदारी अपना लक्ष्य मानते हैं। वे मानते हैं कि राजनीतिक पार्टियों के साथ किसी प्रकार का रागात्मक संबंध स्थापित कर अपने आप को बांधना नहीं चाहिए बल्कि उनका उपयोग कर सत्ता में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। इसीलिए हम पाते हैं कि वे सभी राजनीतिक दलों में अपनी भागीदारी रखते हैं। हर नई संभावना में अपनी भागीदारी बढ़ाते हैं और फिर उसके बल पर सत्ता सुख भोगते हैं। लेकिन नई संभावना के चक्कर में वे अपनी पुरानी जगह भी छोड़ते नहीं हैं, आजादी के तुरंत बाद वे कांग्रेस के माध्यम से सत्ता में आये लेकिन कांग्रेस को ही पकड़े नहीं बैठे रहे और कांग्रेस को छोड़ने के लिए कोई अभियान भी नहीं चलाया बल्कि हर संभावना में अपना स्थान बनाते रहे और किसी राजनीतिक दल के प्रति निष्ठावान बनने की अपेक्षा सत्ता में अधिकतम भागीदारी के अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान बने रहे वहीं हम आज भी भाजपा को ही अपना मानते हैं और उसी अपनेपन के कारण शिकायत कर शांत हो जाते हैं अथवा विरोध करने का इतना प्रचार करते हैं कि प्रतिपक्षी राजनीतिक दल भी हमारे समर्थन को भाजपा के विरोध के कारण स्वतःस्फूर्त मानकर महत्व नहीं देता। ऐसे में हमें इस वास्तविकता को समझना पड़ेगा कि वर्तमान समय के राजनीतिक परिदृश्य में हर पार्टी अपने समर्थक वर्गों के कुनबे को बढ़ाना चाहती है और ऐसे में नये आने वाले वर्गों के लिए अवसरों को जुटाने के लिए वह पुराने वालों के अवसरों में कटौति करेगी और उसका निश्चित खामियाजा भाजपा में हमें भोगना पड़ रहा है। इसका उपाय यह है कि हमें किसी भी प्रकार के छद्म नारों के चक्कर में फंसे बिना सभी राजनीतिक दलों में अपनी संभावना तलाशनी चाहिए। हमारा लक्ष्य कोई एक राजनीतिक दल न होकर सत्ता में भागीदारी को अधिकतम बनाकर उसका उपयोग हमारे पूर्वजों के जीवन मूल्यों के अनुरूप करना होना चाहिए। हमें भी राजनीतिक पार्टियों को केवल हमारे आदर्शों को चरितार्थ करने के लिए सत्ता में भागीदारी का साधन मात्र मानना चाहिए और किसी राजनीतिक दल को अपना या पराया मानने की अपेक्षा हमें हर राजनीतिक दल में अपनी भागीदारी बढानी चाहिए। हमें केवल भाजपा से शिकायत दर्ज करवा कर ही शांत नहीं होना चाहिए बल्कि उपयुक्त विकल्प पर काम करना प्रारंभ करना चाहिए और वही एक मात्र उपाय है जब सभी राजनीतिक पार्टियां अन्य वर्गों की तरह हमारी ओर भी अपना ध्यान केन्द्रित करेंगी। श्री क्षत्रिय युवक संघ के निर्देशन में श्री प्रताप फाउंडेशन लगातार ऐसे प्रयास कर रहा है। वह सभी जगह संभावनाएं तलाशने को प्रयत्नशील रहता है लेकिन समाज की गति उतनी नहीं है जितनी अपेक्षित है इसलिए श्री प्रताप फाउंडेशन के प्रयास भी उपयुक्त परिणाम नहीं दे पाते। इसलिए आयें हम सब इस आवश्यकता को समझें और तदनुसार अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देना प्रारंभ करें। हम सदैव याद रखें कि हमें ना ही तो भाजपा का बने रहना है और ना ही भाजपा को छोड़ना है। हमें ना ही कांग्रेस या अन्य किसी दल से परहेज करना है और ना ही आगे कदम रखने की जगह तलाशे बिना पिछला कदम उठाना है। श्री प्रताप फाउंडेशन की यही नीति है, वह सदैव अपना कदम बढ़ाने के लिए उपयुक्त जगह तलाशता रहता है लेकिन जब तक उपयुक्त जगह नहीं मिले, पहले से रखा हुआ कदम हवा में उठाता भी नहीं है।

मेवाड़ का गुहिल वंश

मेवाड़ के इतिहास में तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक नया अध्याय शुरू होता है जब जैत्रसिंह मेवाड़ का शासक बनता है। जैत्रसिंह एक वीर, कुशल प्रशासक और निपुण सेनानायक थे। अपने पिता पदमसिंह के बाद जैत्रसिंह वि.सं. 1270 में मेवाड़ के शासक बने। चीरवै के लेख से पता चलता है कि जैत्रसिंह इतना शक्तिशाली शासक था कि मालवा, गुजरात, मारवाड़ जांगल तथा दिल्ली के शासक जैत्रसिंह की शक्ति का भय खाते थे और जैत्रसिंह के विरुद्ध सैन्य अभियानों में उन्हें हर बार मुंह की खानी पड़ी। चीरवै के लेख से पता चलता है कि जैत्रसिंह ने अपने पूर्व शासकों के काल में शक्तिहीन हुए मेवाड़ को पुनः एक शक्तिशाली राज्य बना दिया।

जैत्रसिंह के शासनकाल से पूर्व सामन्तसिंह के समय नागैरा के कीलू चौहान ने मेवाड़ पर अधिपत्य स्थापित किया था, जैत्रसिंह ने उस पराजय का बदला लेने के लिए नाड़ौल पर आक्रमण किया, नाड़ौल को जैत्रसिंह जैसे शक्तिशाली शासक से बचने के लिए नाड़ौल के शासक उस उदयसिंह ने अपनी पौत्री का विवाह जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह से कर मेवाड़ और नाड़ौल में मैत्री संबंध स्थापित किया। चीरवै के लेख के अनुसार जैत्रसिंह ने मालवा के परमारों को भी परास्त किया। इस समय जब राजस्थान और गुजरात में शक्तिशाली केन्द्रीय शक्ति का अभाव था उस समय दिल्ली के तुर्क सुल्तान भी अपना प्रभाव राजस्थान में बनाने को प्रयासरत थी, इस समय दिल्ली का शासक इक्तुतमिश था। इक्तुतमिश ने मेवाड़ पर अधिकार करने की योजना बनाई। तुर्क सेना नागदा तक पहुंच गई और उसे नष्ट कर दिया गया, परन्तु जैत्रसिंह द्वारा स्थान-स्थान पर तुर्क सेना का प्रतिरोध किया गया और तुर्क सेना को अत्यधिक नुकसान पहुंचाया गया। अंत में तुर्क सेना को परास्त होकर चित्तौड़ से भागना पड़ा। समरसिंह के आबू के शिलालेख से इसकी पुष्टि होती है जितने उल्लेख है कि जैत्रसिंह उस तुरुष्क रुपी समुद्र का पान करने के लिए अगस्त्य के समान था। जैत्रसिंह के शासन काल में सिन्ध के जलालुद्दीन रूवारिज्म ने अपने राज्य विस्तार के लिए अपने सेनापति खवास खां को सेना सहित अन्हिलवाड़ा भेजा। इस सेना को मार्ग में रोक कर जैत्रसिंह ने नष्ट कर दिया। जैत्रसिंह के शासनकाल के अंतिम वर्षों दिल्ली के सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद ने मेवाड़ पर आक्रमण किया। आक्रमण का कारण नसीरुद्दीन महमूद को जैत्रसिंह के हाथों पराजित होना पड़ा।

जैत्रसिंह अपने समय का सबसे प्रतापी वीर व योग्य शासक था जिसने मेवाड़ की शक्ति को सर्वोच्च स्थिति में पहुंचा दिया था। जैत्रसिंह ने सामरिक दृष्टि से चित्तौड़ के महत्व को समझा और उसकी सुरक्षा के लिए प्राचीरों का निर्माण करवाया। अब चित्तौड़ भी आहाड़ और नागदा की भांति मेवाड़ राज्य का सुदृढ़ शक्ति केन्द्र बन गया। **(क्रमशः)**

विभिन्न क्षेत्रों में कार्य विस्तार बैठकें आयोजित

श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषंगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जिला समितियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों की कार्यविस्तार बैठकें आयोजित की गई। 12 मार्च को पाली शहर की कार्यविस्तार बैठक वीर दुर्गादास छात्रावास में सम्पन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन के गठन, उद्देश्य और कार्यप्रणाली पर केंद्रीय परिषद सदस्य दिग्विजय सिंह कोलीवाडा ने विस्तार पूर्वक बताया। साथ ही उपस्थित संभागीयों से अन्याय के प्रतिकार के लिए संवैधानिक साधनों आरटीआई, संपर्क पोर्टल, 181 हेल्पलाइन आदि के बारे में चर्चा की गई। बैठक में पाली जिला समिति के सहयोगी स्थानीय समाजबंधु एवं युवा उपस्थित रहे। 13 मार्च को श्रीगंगानगर जिले की रायसिंहनगर तहसील की बैठक ब्लैक पैंथर होटल में संपन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य नवीन सिंह भवाद ने फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के विषय में विस्तार से बताया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हनुमान सिंह छाजुसर (68NP) ने संघ की स्थापना से अभी तक के सफर की जानकारी दी। बैठक के दौरान पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि अमर सिंह 68NP, पूर्व जिला परिषद सदस्य लक्ष्मण सिंह 2APD, कान सिंह सरपंच 68NP और विक्रम सिंह सहित स्थानीय सहयोगी उपस्थित रहे। बैठक का संचालन रविंद्र सिंह मोकलसर ने किया।

इसी दिन जयपुर जिले के आमेर तहसील की बैठक गांव चतरपुरा में संपन्न हुई। बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर संभाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर ने संघ के बारे में विस्तार से बताया। फाउण्डेशन के जयपुर जिला प्रभारी रूपेन्द्र सिंह करीरी ने फाउन्डेशन के गठन और उद्देश्य के बारे में विस्तार से बताया एवं युवाओं को फाउण्डेशन से जुड़ने का आग्रह किया। सिरोही जिले की नवगठित जिला समिति की प्रथम बैठक होटल अतिथि में 13 मार्च को संपन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद सदस्य भेरूपाल सिंह दासपां ने फाउंडेशन के उद्देश्य बिंदुओं को विस्तार से बताया, दिग्विजय सिंह कोलीवाडा ने फाउंडेशन की जनवरी माह में हुई केंद्रीय परिषद की बैठक में तय हुए

कार्य बिंदुओं पर चर्चा की और सभी जिला समिति सदस्यों ने बिंदुवार कार्यों का दायित्व लिया। बैठक में जिले की सभी तहसीलों में बैठक कर अधिकतम युवाओं को फाउंडेशन और संघ से जोड़ने की कार्ययोजना बनाई गई। इसी दिन नागौर जिले के बू कर्मसोतां की बैठक सामुदायिक भवन में संपन्न हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के भवानी सिंह मुंगेरिया ने संघ की समाज में वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता बताते हुए कहा कि वर्षों से मीडिया ने हमें खलनायक बताने का प्रयास किया परन्तु संघ के हीरक जयंती समारोह में देशभर से आए लाखों क्षत्रियों ने अनुशासित और मर्यादित रुप से अपनी उपस्थिति देकर राष्ट्र को एक बड़ा संदेश दिया है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय परिषद के सदस्य राम सिंह चरकडा ने कहा कि फाउंडेशन विगत तीन वर्षों से समाज में सकारात्मक क्रियाशीलता बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है। फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य जय सिंह सागु बडी ने संघ के अन्य आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप फाउंडेशन की स्थापना और उद्देश्य के बारे बताते हुए कहा कि समाज में राजनीतिक नेतृत्व को बढ़ाने के लिए श्री प्रताप फाउंडेशन कार्य कर रहा है। कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित सदस्यों को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक श्री माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा भेजी गई यथार्थ गीता भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन जब्बर सिंह दौलतपुरा ने किया। सीकर जिले के भारिजा गांव की बैठक भी इसी दिन संपन्न हुई।

बैठक में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन और श्री प्रताप फाउंडेशन के विषय में चर्चा की गई। बैठक के दौरान सीकर जिला समिति के सदस्य बसन्त सिंह बरसिंहपुरा, ओंकार सिंह करड़ एवं अन्य स्थानीय सहयोगी उपस्थित रहे। इसी दिन अलवर जिले की बैठक स्वरूप विलास होटल में संपन्न हुई। बैठक में संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने संघ के मार्ग दर्शन में काम कर रहे श्री प्रताप फाउंडेशन और श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी देते हुए इनके द्वारा समाजिक जागरण के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया। बैठक में संघ के पूर्वी राजस्थान संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया, देवी सिंह बानसूर, सूरजभान गौड़, डॉ. पवन सिंह शेखावत, विजेन्द्र सिंह चौहान, दशरथ सिंह शेखावत, हितेंद्र सिंह, डॉ.जालम सिंह अग्रोहा सहित

समाज के प्रबुद्धजन शामिल हुए।

16 मार्च को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्ययोजना के छठे बिंदु 'क्षत्रिय समाज व अन्य समाजों के बीच सम्मानपूर्वक सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने का प्रयास करना' के तहत बीकानेर में मुस्लिम समाज के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में क्षत्रिय एवं मुस्लिम समाज के प्रबुद्धजनों सहित फाउंडेशन के स्थानीय सहयोगी उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR | 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

विभिन्न स्थानों पर होली स्नेहमिलन सम्पन्न

दुगोली

18 मार्च को सूरत प्रांत की तनेराज शाखा में स्वयंसेवकों द्वारा होली स्नेहमिलन का आयोजन किया गया जिसमें एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली की बधाई दी गई। प्रांत प्रमुख खेत सिंह चादेसरा ने कहा कि होली प्रेम भाव और भाईचारे का त्योहार है। संघ पूरे समाज को भ्रातृत्व की डोर से बांधने का कार्य कर रहा है और हम सब भाग्यशाली हैं कि इस कार्य में सहभागी बनकर अपने जीवन को भी प्रेमपूर्ण बनाने का हमें अवसर मिला है। दिलीप सिंह गड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया। मनोहर सिंह दुजार ने बदलते दृश्य पुस्तक से 'लग्न की परीक्षा' प्रकरण का पठन किया। जोधपुर में श्री हनुमंत छात्रावास शाखा द्वारा भी होली स्नेहमिलन रखा गया जिसमें छात्रावास के छात्र सम्मिलित हुए तथा एक दूसरे को गुलाल लगाकर व मिष्ठान खिलाकर होली मनाई गई। नागौर संभाग में लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के ढींग गांव में भी होली स्नेह मिलन का आयोजन हुआ जिसमें उपस्थित समाजबंधुओं को प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर की ओर से यथार्थ गीता भेंट की गई। जायल क्षेत्र के दुगोली गढ़ में भी होली स्नेह मिलन आयोजित किया गया जिसमें रतनोत जोधा राजपूतों के 20 गांवों के समाजबंधुओं ने उपस्थित रहकर अपने इतिहास व संस्कृति के संरक्षण पर चर्चा की। इस दौरान भविष्य में रतन सिंह जी की जयंती मनाने का भी निर्णय लिया गया। कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी, विक्रम सिंह खंवर, महावीर सिंह रोजा, नागपाल सिंह दुदोली, रूप सिंह परावा,

सिरसूं

दौलत सिंह डाबड़ी, शोभ सिंह राजालिया, मान सिंह गुढ़ा व भवानी सिंह राबडियावास ने अपने विचार रखे। सुरेंद्र सिंह तंवरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। पाली जिले के गुड़ा केसर सिंह गांव में 18 मार्च को धुलंडी के दिन राजपूत समाज की बैठक आयोजित हुई जिसमें गांव के समाजबंधुओं ने मिलकर पारिवारिक व सामाजिक कार्यक्रमों में प्रचलित कुरीतियों को हटाने का संकल्प लिया। आपसी विचार-विमर्श व चर्चा के पश्चात सभी ने मिलकर एक लिखित दस्तावेज भी तैयार किया जिसे सभी उपस्थित समाजबंधुओं ने हस्ताक्षर करके सहमति प्रदान की। बैठक में विवाह, जाया-आणा, ढूंढोत्सव, मृत्युभोज आदि अवसरों पर दिखावे तथा अनावश्यक खर्च की गुरुदेव कुरीतियों को बंद करने का निर्णय लिया गया। मकराना क्षेत्र के सिरसू गांव स्थित हमीर हवेली कृषि फार्म पर 20 मार्च को विधानसभा क्षेत्र के 140 गांवों के राजपूत समाजबंधुओं का होली स्नेह मिलन आयोजित हुआ। राजपूत शक्ति संयोजन के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मकराना तहसील के अनेकों जनप्रतिनिधि सम्मिलित हुए तथा मतदाता सूची में नाम जोड़ने, राजनीति में सक्रिय समाजबंधुओं का सहयोग करने व सभी राजनीतिक दलों में सक्रिय भागीदारी निभाने आदि बिंदुओं पर चर्चा की गई। इस दौरान पूर्व सरपंच रेवंत सिंह सिरसू, कर्नल केसरी सिंह शिवरासी, हिम्मत सिंह मामडोली, सरपंच संघ अध्यक्ष दिलीप सिंह गैलासर, पंचायत समिति सदस्य नारायण सिंह मिण्डकिया सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

आरएसएस के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख 'संघशक्ति' में

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख श्री रामलाल जी ने आज संघशक्ति पहुंचकर माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी भी उपस्थित रहे।

हर्षवर्धन सिंह जाखड़ी ने प्राप्त की आईआईटी जैम परीक्षा में 99वीं वरीयता

जालौर जिले के जाखड़ी गांव निवासी हर्षवर्धन सिंह ने ज्वाइंट एडमिशन टेस्ट फॉर मास्टर्स ऑफ साइंस आईआईटी परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 99वां स्थान प्राप्त किया है। हर्षवर्धन सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं, इन्होंने 7 शिविर किए हैं तथा वर्तमान मे महाराजा महाविधालय जयपुर मे B. Sc. (Meths) अन्तिम वर्ष में अध्यनरत हैं। इनके पिता नाहर सिंह जाखड़ी श्री क्षत्रिय युवक संघ के भीनमाल प्रांत के प्रांत प्रमुख हैं तथा पूरा परिवार संघ से जुड़ा हुआ है।

विपेन्द्र सिंह का कृषि पर्यवेक्षक परीक्षा में प्रथम 10 में चयन

बाड़मेर के कल्याण सिंह की ढाणी (बावड़ी कल्ला) निवासी विपेन्द्र सिंह ने राजस्थान कल्याण कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित कृषि पर्यवेक्षक परीक्षा में सफलता प्राप्त करते हुए राजस्थान के प्रथम 10 अभ्यर्थियों में स्थान प्राप्त किया किया है। वर्तमान में चौहटन स्थित भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग में अध्ययनरत विपेन्द्र सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं तथा 13 प्रशिक्षण शिविर कर चुके हैं।

जोधपुर के बालेसर गोतावर बांध का शिलान्यास

गोतावर बांध

जोधपुर में शेरगढ़ के इंदावटी क्षेत्र में लंबे समय से क्षेत्रवासियों द्वारा गोतावर बांध के लिए मांग की जा रही थी। इस मांग के अनुरूप केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय द्वारा 13 मार्च को गोतावर बांध परियोजना का शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, जोधपुर के पूर्व महाराजा गज सिंह, केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, पूर्व विधायक शैतान सिंह, पूर्व विधायक बाबू सिंह राठौड़, प्रताप सिंह सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। इंदावटी व गोतावर विकास कमेटी द्वारा आयोजन व्यवस्था में सहयोग किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के माननीय संरक्षक भी इस कार्यक्रम में पधारने वाले थे लेकिन उसी दिन पू. तनसिंह जी के पौत्र लक्ष्मणसिंह रामदेरिया का देहावसान होने के कारण उन्हें वहां जाना पड़ा। संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	मा.प्र.शि.	12.04.2022 से 17.04.2022 तक	मोहनसिंह जी नाल का फार्म हाउस, नाल (बीकानेर) संपर्क सूत्र- 9414139159, 9829217401 **नोट**- पहले यह शिविर उदयपुर में प्रस्तावित था, अब बीकानेर में होगा।
2.	प्रा.प्र शि.	16.04.2022 से 18.04.2022 तक	झीरखी, अमरोहा, जिला- बिजनौर (उत्तरप्रदेश)। शिविर स्थल अमरोहा से 8 किमी दूर है, 15 की शाम तक पहुंचना है।
3.	मा.प्र.शि.	26.04.2022 से 02.05.2022 तक	बाढ़ मोचिंगपुरा (दौसा)। सीनियर सैकण्डरी स्कूल। दौसा से बेरावण्डा बसें व जीप है गढ में साधन उपलब्ध हो जाएगा।
4.	उ.प्र.शि.	19.05.2022 से 29.05.2022 तक	आलोक आश्रम (बाड़मेर)। बाड़मेर से गेहूं रोड पर स्थित। - कम से कम 10वीं कक्षा की परीक्षा दे चुके हों। - दो प्राथमिक तथा एक माध्यमिक शिविर कर चुके हो, वो ही आ सकते हैं। - 60 वर्ष से ऊपर की आयु वाले या तो आमंत्रित हों या पूर्व स्वीकृति ले ली हो, वे ही आ सकेंगे। 18 मई की शाम तक पहुंचना है। गणवेश लेकर आएं।
5.	उ.प्र.शि. (बालिका)	19.05.2022 से 29.05.2022 तक	विरात्रा (बाड़मेर)। बाड़मेर से बसें उपलब्ध हैं। - 9वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा कम से कम दो शिविर कर चुकी हों, वे ही आ सकेंगी। - केशरिया गणवेश आवश्यक

गजेन्द्रसिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

वर्चुअल माध्यम से मनाया महाराजा प्रवीर चंद्र भंजदेव का बलिदान दिवस

बस्तर रियासत के पूर्व महाराजा प्रवीर चंद्र भंजदेव का बलिदान दिवस श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा 25 मार्च को रात्रि 8 बजे ट्विटर स्पेस के माध्यम से मनाया गया। महाराजा प्रवीर चंद्र भंजदेव के पोते व वर्तमान महाराजा कमल चंद्र भंजदेव ने महाराजा प्रवीर चंद्र का जीवन परिचय देते हुए आदिवासियों के अधिकारों एवं सुरक्षा के लिए उनके द्वारा किए गए संघर्ष के बारे में जानकारी दी और बताया कि किस प्रकार जल, जंगल और जमीन की लड़ाई लड़ते हुए महाराजा ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। उनके रहते बस्तर क्षेत्र में नक्सलवाद, धर्मांतरण जैसी समस्याएं पनप नहीं पाई थी लेकिन तत्कालीन सरकार द्वारा उनकी लोकप्रियता से भयभीत होकर षडयंत्र पूर्वक उनकी हत्या कर दी गई। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम मनाने का कारण यही है कि हमारा जो इतिहास है उस इतिहास को हम भूलते जा रहे हैं और इतिहास को यदि हम भूल जाएंगे तो उससे प्रेरणा प्राप्त नहीं कर सकेंगे। हमारे भूले हुए इतिहास को याद दिलाने का काम श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। महाराज प्रवीर चंद्र भंजदेव के जीवन को यदि हम देखें तो उनमें क्षत्रिय के सारे गुण दिखाई देते हैं। उनकी प्रजा की ओर से उन्हें मिले प्रेम का कारण यही है कि उन्होंने हमेशा उनसे जुड़ाव रखा, उनके लिए बलिदान करने से पीछे नहीं हटे। क्षत्रिय की परिभाषा ही यही है कि वह दूसरों के लिए जीता है अपने लिए नहीं और जब तक हम दूसरों के लिए जीते रहे तब तक सब लोगों ने हमको सर आंखों पर बिठाया। महाराजा प्रवीर चंद्र भंजदेव के जीवन से हमें भी दूसरों के लिए जीने की प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कार्यक्रम का संचालन किया। सैकड़ों की संख्या में देशभर से समाज बंधु कार्यक्रम में जुड़े व महाराजा प्रवीर चंद्र भंजदेव के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट की।

(पृष्ठ दो का शेष)

मानवीय संघ...

श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी दिशा में कार्य कर रहा है। हीरक जयंती समारोह में समाज की एकता और अनुशासन ने इस सत्य को प्रमाणित कर दिया है कि हमारी कौम में आज भी संसार का मार्गदर्शन करने की क्षमता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम अपने दायित्व को समझ कर उसके अनुरूप कर्म करना प्रारंभ कर दें। हम अपना, अपने परिवार का पालन पोषण करें लेकिन साथ ही मातृस्वरूपा समाज को भी ना भूलें जिसमें जन्म लेने का हमें गौरव प्राप्त हुआ है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का जन्म समाज रूपी मां की सेवा के लिए ही हुआ है और इस कार्य में आप सभी के सहयोग की आवश्यकता है। मेवाड़ क्षत्रिय संस्थान ने जो यह आयोजन किया है यह प्रशंसनीय है और ऐसे कार्यक्रम निरंतर होने ही चाहिए जहां हम साथ बैठकर चिंतन कर सकें, एकता की बात कर सकें। हम सभी एक ही मां की संतान हैं और इसलिए हमें मिलकर समाज की सेवा करनी है। कार्यक्रम को निर्भय सिंह राणावत, डॉक्टर शिवदान सिंह राणावत, फतेह सिंह देवड़ा और विक्रम सिंह शेखावत ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में समताराम जी महाराज भी उपस्थित रहे। 13 मार्च को ही रात्रि 8 बजे खेत सिंह चांदेसरा के निवास पर सूरत की नियमित शाखाओं के स्वयंसेवकों का स्नेह मिलन रखा गया जिसमें स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि हम श्री क्षत्रिय युवक संघ में आते हैं तब स्वेच्छा से इसके बंधन को स्वीकार करते हैं। यह बंधन ही हमारी स्वच्छंदता को नियंत्रित करता है और हमें संयमी बनाता है। बिना संयम के किसी भी प्रकार की साधना संभव नहीं है। इसलिए संघ पारिवारिक, सामाजिक आदि बंधनों को तोड़ने की नहीं उन्हें स्वीकार करने की बात करता है। महाराष्ट्र संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाना व वरिष्ठ स्वयंसेवक पाबूदान सिंह दौलतपुरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 14 मार्च को राजपूत वाड़ी सूरत में सामूहिक शाखा रखी गई जिसमें स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने शाखा का महत्व समझाते हुए कहा कि शाखा संघ का प्राण है और नियमितता व निरंतरता शाखा का प्राण है। इसलिए नियमित रूप से हम शाखा में आते रहें तो संघ हमारे जीवन में अवश्य उतरेगा। इसके पश्चात माननीय संघप्रमुख श्री ने बालिकाओं की पद्मिनी शाखा में पहुंच कर स्वयंसेविकाओं से प्रांत में हो रहे संघकार्य के संबंध में चर्चा की। 14 मार्च की राजपूत सभा भवन में सभी राजपूत संस्थाओं के जनप्रतिनिधियों से बात की।

17 मार्च को माननीय संघप्रमुख श्री पूर्वी राजस्थान संभाग में प्रवास पर रहे। उन के सानिध्य में अलवर प्रांत में पिपली, बहरोड़ व कोटपुतली में कार्यक्रम रखे गए। संघप्रमुख श्री ने स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं से चर्चा में कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ गीता में वर्णित अभ्यास व वैराग्य की प्रक्रिया के माध्यम से समाज के युवाओं में क्षत्रियोचित गुणों का विकास करने का कार्य कर रहा है। वर्तमान के विपरीत वातावरण के कारण यह कार्य दीर्घकालीन एवं श्रमसाध्य अवश्य है लेकिन इसके बिना कौम के खोए हुए गौरव को प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग नहीं है। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ, संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया व प्रांत प्रमुख मनोज सिंह सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। इसके पश्चात प्रवास के अगले चरण में माननीय संघप्रमुख श्री मेवाड़ मालवा संभाग पहुंचे। यहां उनके सानिध्य में 19 मार्च को प्रातः11 बजे भीलवाड़ा स्थित महाराणा कुंभा छात्रावास भवन में स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि सच्चा क्षत्रिय वही है जो अपने आचरण द्वारा समाज को मार्गदर्शन प्रदान करें। क्षत्रिय बिना किसी भेदभाव के सभी को साथ लेकर चलता है और समाज, राष्ट्र, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने में भी पीछे नहीं हटता। आज सामाजिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में जो गिरावट आ रही है उसे क्षात्रवृत्ति के पुनरुत्थान से ही रोका जा सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही कार्य कर रहा है। कार्यक्रम के पश्चात पत्रकारों से बातचीत करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ राष्ट्रहित में होने वाली प्रत्येक गतिविधि में सहयोग करने को तत्पर हैं। संघ सदैव राष्ट्र के साथ खड़ा है। यद्यपि राजनैतिक तोड़फोड़ की नीति में संघ विश्वास नहीं करता और विवादों में पड़ने की बजाय संस्कार निर्माण का अपना मुख्य कार्य करने पर ही केंद्रित रहता है। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने उपस्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य क्षेत्र की जानकारी देते हुए बताया कि संघ कार्य धीरे-धीरे देश भर में विस्तार पा रहा है। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने पूज्य तन सिंह जी व श्री क्षत्रिय युवक संघ का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला, प्रांत प्रमुख विजय राज सिंह जालिया, वीरेंद्र सिंह तलावदा, पूर्व जिला प्रमुख शक्ति सिंह हाडा, कोटडी प्रधान करण सिंह बेलवा, हुरडा प्रधान कृष्णा सिंह, मसूदा प्रधान सुरेंद्र सिंह सिखरानी सहित अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। 19 मार्च को ही सायं 5 बजे चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर स्थित जौहर भवन में भी स्नेहमिलन का आयोजन हुआ जिसमें माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि वर्तमान समय में समाज में कोई भी महत्वपूर्ण परिवर्तन संगठन की शक्ति के बिना नहीं लाया जा सकता। श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में उसी संगठन की शक्ति के निर्माण के लिए कार्य कर रहा है परंतु श्री क्षत्रिय युवक संघ का मूल उद्देश्य क्या है, पूज्य श्री तन सिंह जी ने क्यों इसकी स्थापना की, यह भाषणों एवं बातों से नहीं समझा जा सकता। इसके लिए हमें संघ की शिक्षण प्रक्रिया में से गुजरना होगा। उन्होंने आगे कहा कि जो समाज अपना इतिहास भूल जाता है वह नष्ट हो जाता है। हमें अपने इतिहास को जानने और उससे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। हमारे पूर्वजों के नैतिक और चारित्रिक गुण क्या थे, उन्हें जानकर अपने भीतर उन गुणों को उतारने की आवश्यकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग अधिकार प्राप्ति के संघर्ष का नहीं बल्कि कर्तव्य पालन की ऊर्ध्वगामी साधना का मार्ग है। इस साधना में स्वयं को नियोजित करके ही हम संसार को भी श्रेष्ठता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर सकेंगे। कर्नल रणधीर सिंह बस्सी, गोपाल सिंह राठौड़, भगवत सिंह चित्तौडीखेड़ा, कृष्ण पाल सिंह ब्यावर, खुमान सिंह अकोला गढ़, मोहन सिंह भाटियों का खेड़ा आदि ने हीरक जयंती समारोह के अपने अनुभव बताए। स्थानीय विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, जौहर स्मृति संस्थान के अध्यक्ष तख्त सिंह फाचर, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय परिषद के सदस्य हर्षवर्धनसिंह रूद सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। बृजराज सिंह खारडा ने कार्यक्रम का संचालन किया। 20 मार्च को माननीय संघ प्रमुख श्री मेवाड़ वागड़ संभाग पहुंचे जहां उन के सानिध्य में डूंगरपुर जिले के साबला उपखंड स्थित त्रिवेणी संगम (बेणेश्वर) में स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि जिस क्षात्र-परंपरा में हमें जन्म मिला है उस परंपरा में ही भगवान राम और भगवान कृष्ण जैसे अवतार भी जन्मे हैं। इसलिए इसके महत्व को समझ कर हमें भी पूर्वजों की भांति कर्तव्यपालन के मार्ग पर चलते हुए भटकी हुई मानवता को सही मार्ग दिखाना है। केवल भौतिक सुविधाएं जुटाने में ही हमारा जीवन ना बीत जाए क्योंकि जीवन की सार्थकता भोग में नहीं बल्कि त्याग में है क्योंकि यही ईश्वर को प्रसन्न करने का मार्ग है। अपने स्वधर्म को जानकर उसके अनुरूप जीवन जीने से ही ईश्वर का हमें क्षत्रिय कुल में जन्म देने का हेतू पूरा होगा। गजेंद्र सिंह आऊ ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के संबंध में जानकारी दी। 20 मार्च को सायं 7 बजे उदयपुर में बीएन यूनिवर्सिटी के कुंभा सभागार में स्वयंसेवकों का स्नेह मिलन रखा गया जिसमें संघप्रमुख श्री ने कहा कि संघ के प्रतिनिधि के रूप में संसार की हम पर नजर है इसलिए हमें प्रत्येक कदम पर जागृत रहने की आवश्यकता है क्योंकि हमारी किसी भी भूल से लोगों को संघ पर आक्षेप करने का अवसर मिलेगा। इसलिए निरंतर अपने आप को परिमार्जित करने की साधना में लगे रहें और संघ दर्शन को जीवन में उतारने का प्रयास करते रहें।

(पेज एक का शेष)

अभिनंदनीय...

गुजरात सरकार ने इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने की घोषणा कर अभिनंदनीय पहल की है जिसका संपूर्ण राष्ट्र को आगे बढ़कर स्वागत करना चाहिए और केन्द्र सरकार व शेष राज्यों को इसका अनुसरण करना चाहिए।

(पृष्ठ पांच का शेष)

विभिन्न क्षेत्रों...

बैठक में संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने बताया कि वर्तमान में फाउंडेशन से समाज की अपेक्षाएं बढ़ी है अतः हमें भी उसी अपेक्षा में कार्य करना होगा और यह तभी संभव हो पाएगा जब हम श्री क्षत्रिय युवक संघ के निर्देशित मार्ग पर चलते हुए कार्य करेंगे। बैठक में फाउंडेशन के कार्यों को गति देने के लिए कार्य योजना बनाई गई एवं सुनिश्चित किया गया कि प्रत्येक सप्ताह एक एक गांव तक पहुंच कर फाउंडेशन के संदेश को आम राजपूत तक पहुंचाया जाए। 17 मार्च को ही सीकर जिले के बरसिंहपुरा गांव की बैठक एवं होली स्नेह मिलन बरसिंहपुरा (दांतारामगढ़) स्थित श्री राजपूत सभा भवन में सम्पन्न हुआ। बैठक में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के विषय में चर्चा की गई। 19 मार्च को सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ तहसील की बैठक तिडोकी बड़ी के बालजती जी आश्रम में आयोजित की गई। बैठक में संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा, फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद सदस्य यशवर्धन सिंह झेरली और श्रवण सिंह बगड़ी ने श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी। बैठक में जितेंद्र सिंह बगड़ी, अजय सिंह तिडोकी, भरत सिंह कुमास, हनुमान सिंह सोला, दीपेंद्र सिंह सांवलोद, नवरत्न सिंह तिडोकी, सियान सिंह गनेड़ी, जीवराज सिंह सालासर, बिजेन्द्र सिंह सांवलोदा, गजेंद्र सिंह राजास आदि ने भी अपने विचार रखें। कार्यक्रम के अंत में आश्रम के प्रभारी श्री महावीर यति जी महाराज के आशीर्वचन प्राप्त हुए।

20 मार्च को श्रीगंगानगर जिले की सूरतगढ़ तहसील की बैठक एवं होली स्नेह मिलन समारोह श्री राजपूत क्षत्रिय संस्था सूरतगढ़ में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद के सदस्य प्रताप सिंह कुमास ने फाउंडेशन की कार्ययोजना के उद्देश्य बिंदुओं को विस्तार से सभी के समक्ष प्रस्तुत किया। चूरू जिले की राजगढ़ तहसील की बैठक ओसवाल धर्मशाला में सम्पन्न हुई। बैठक में संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बैठक में राजपूत सभा राजगढ के अध्यक्ष विक्रमसिंह चैनपुरा, संघ के चुरु प्रांत के प्रांतप्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर, फाउंडेशन की केन्द्रीय परिषद के सदस्य गजेन्द्र सिंह लूँछ और अरविन्द सिंह बालवा सहित वरिष्ठ स्वयंसेवक मातु सिंह मानपुरा, जितेन्द्र सिंह खिरोड़, जितेन्द्र सिंह बीराण, हरी सिंह मिठड़ी एवं अन्य स्थानीय समाजबंधु उपस्थित रहे। जयपुर जिले की पावटा तहसील की बैठक राव श्री रतनाजी राजपूत सभा भवन पावटा में सम्पन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन के जयपुर जिला प्रभारी रूपेंद्र सिंह करीरी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ व श्री प्रताप\ फाउंडेशन के बारे में विस्तार से बताया। जिला समिति सदस्य दीपेंद्र सिंह रोजदा ने फाउन्डेशन के गठन और कार्ययोजना के उद्देश्य बिंदुओं को विस्तार से सभी के समक्ष प्रस्तुत किया एवं युवाओं को फाउन्डेशन व संघ से जुड़ने का आग्रह किया। इसी दिन चूरू तहसील की बैठक बणीर राजपूत छात्रावास सम्पन्न हुई। बैठक में संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी। जयपुर जिले की दूदू तहसील की ग्राम पंचायत स्तरीय बैठक ग्राम हटूपूरा में सम्पन्न हुई। बैठक में संघ के जयपुर ग्रामीण प्रान्त के प्रान्त प्रमुख देवेंद्र सिंह बड़वाली ने संघ का परिचय देते हुए बताया कि संस्कार निर्माण के बिना शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है अतः संघ की सामुहिक संस्कारमय कार्यप्रणाली से आज के युवाओं को संघ के शिविरों, शाखाओं एवं अन्य कार्यक्रमों से जुड़ना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन फाउंडेशन की जयपुर जिला समिति के सदस्य दीप सिंह सामी ने किया। झुंझुनूं जिले की खेतड़ी तहसील की बैठक कुमावत धर्मशाला में आयोजित की गई। बैठक में फाउंडेशन की केंद्रीय समिति के सदस्य यशवर्धन सिंह झेरली ने श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्ययोजना के उद्देश्य बिंदुओं के बारे में जानकारी दी। बूंदी जिले की जिला समिति की बैठक बूंदी स्थित महाराव राजा भाव सिंहजी की गद्दी (पुरानी कोतवाली) में सम्पन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन की केंद्रीय परिषद सदस्य अरिहंत सिंह चरड़ास एवं जिला समिति सदस्यों ने फाउंडेशन की आगामी कार्ययोजना बनाई।

जीवनसिंह नरधारी को मातृशोक

श्रीमती दीप कंवर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के चित्तौड़गढ़ प्रांत प्रमुख जीवनसिंह नरधारी के माताजी **श्रीमती दीप कंवर** पत्नी स्व.श्री दीपसिंह शक्तावत का 86 वर्ष की उम्र में 15 मार्च 2022 (मंगलवार) को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें तथा परिजनों को संबल प्रदान करें।

|श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम|

सादर श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय स्वयंसेवक साथी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक **पूज्य श्री तनसिंह जी** के पौत्र

श्री लक्ष्मणसिंह रामदेरिया

पुत्र श्री पृथ्वीसिंह रामदेरिया के आसमयिक निधन पर हम सभी **अश्रुपूरित श्रद्धांजलि** अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं शोक संतप्त परिजनों को यह वज्रपात सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्रद्धानवत:

छतर सिंह कुण्डल, गंगा सिंह पादरु, हिन्दू सिंह तामलोर, राजु सिंह कुण्डल, ईश्वर सिंह पादरु, फूल सिंह छापला, रणवीर सिंह देवन्दी, जितेन्द्रपाल सिंह गुड़ानाल, गोविन्द सिंह धीरा, जितेन्द्र सिंह गोलियां भायलान, राम सिंह कुण्डल, पाबु सिंह करना, ओम सिंह मिठौड़ा, विक्रम सिंह गुड़ानाल, हरीकरण सिंह तिरगटी, मांगु सिंह वरिया, भगवत सिंह सिवाना, पुरण सिंह काठाड़ी, पदम सिंह सिवाना, मदन सिंह जीनपुर, समुद्र सिंह बालियाना, जालम सिंह मिठौड़ा, यशपाल सिंह कुण्डल, मोरध्वज सिंह कुशीप, बलवन्त सिंह दाखां, भवानी सिंह बूट, कालू सिंह मिठौड़ा, महेन्द्र सिंह पादरडी कलां, नारायण सिंह इन्द्राणा, जसवंत सिंह मोकलसर, गोपाल सिंह भाटा, सुरेन्द्र सिंह मेली, सोमत सिंह पादरु, हुकम सिंह गुड़ानाल, चंदन सिंह भीमगोड़ा (कुशीप), मूल सिंह भीमगोड़ा (कुशीप), पेपसिंह गूगरोट, खेत सिंह जीनपुर, दलपतसिंह थापन, उम्मेद सिंह रेडाणा (खंडप)

|श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम| |श्रीराम|

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org